

Research Paper

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

¹रश्मि कुमारी, ^{2*}डॉ. संजय तिवारी

¹शोध छात्रा, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, ²असिस्टेंट प्रोफेसर, गया कॉलेज (मगध वि.वि.) गया, बिहार

*Corresponding Author

शोध सार

महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आत्मनिर्भरता को केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया था। उनकी आत्मनिर्भरता का विचार केवल आर्थिक आज़ादी तक संकीर्ण नहीं था, अपितु यह वह व्यापक सोच थी जिसमें सामाजिक न्याय, नैतिकता, विकेंद्रीकृत प्रणाली, सहयोगपूर्ण विकास और मानवीय मूल्य जैसे तत्व शामिल थे। वर्तमान में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, पर्यावरणीय संकट और महामारी के बाद की परिवर्तित वैश्विक परिस्थितियों में गांधी जी की 'आत्मनिर्भरता' के विचार का महत्व फिर से बढ़ गया है। स्वतंत्रता के लगभग सात दशकों के बाद, वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' गांधी जी की विचारधारा की प्रासंगिकता को पुनः एक नए सिरे से रेखांकित करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र, गांधी जी की आत्मनिर्भरता की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी स्थिति तथा भावी संभावनाओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में एक समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। यह शोध पत्र आत्मनिर्भरता के विचार के व्यावहारिक क्रियान्वयन की संभावनाओं को टटोलता है, और भारत की एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की अवधारणा की पूर्ति हेतु संभावित उपायों का भी विवेचन करता है। शोध और विश्लेषण के पश्चात प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि वर्तमान समय में चल रही आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं का स्वरूप भले ही औद्योगीकरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित है, तथापि गांधी जी की विचारधारा के स्वदेशीकरण, विकेंद्रीकरण, ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था और पर्यावरण-संतुलन जैसे मूल तत्वों को समाहित किए बिना वास्तविक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति का लक्ष्य संभव नहीं होगा।

मुख्य शब्द: महात्मा गांधी, आत्मनिर्भरता, स्वदेशी, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भर भारत, विकेंद्रीकरण

Received 05 Aug., 2026; Revised 14 Aug., 2026; Accepted 16 Aug., 2026 © The author(s) 2026.

Published with open access at www.questjournals.org

प्रस्तावना

आत्मनिर्भरता का विचार भारत की सांस्कृतिक चेतना में सदियों से रचा-बसा रहा है, किंतु इसे एक व्यवस्थित राष्ट्रीय विचार का रूप महात्मा गांधी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष के दौरान दिया। गांधी जी का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक भारत की जनता आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो जाती। उनके लिए आत्मनिर्भरता केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक सीमित नहीं थी,

अपितु यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित विकास, प्रशासनिक विकेंद्रीकरण, स्थानीय संसाधनों के उत्पादक उपयोग और प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा तथा श्रम के सम्मान से जुड़ा एक व्यापक दर्शन था। महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित रहा। गांधी जी का मानना था कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम नहीं होगा, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता की प्राप्ति संभव नहीं है। गांधीजी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना केवल आर्थिक स्वावलंबन तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन था जिसका उद्देश्य व्यक्ति और समाज को स्वतंत्र, गरिमामयी और स्वाभिमानी बनाना था और यह संकल्पना आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अब एक प्रासंगिक आवश्यकता बन चुकी है।

इक्कीसवीं सदी का वैश्विक परिदृश्य तीव्र तकनीकी प्रगति के साथ ही अभूतपूर्व आर्थिक असमानताओं, वैश्विक महामारी, भू-राजनीतिक उथल-पुथल, पर्यावरणीय संकटों और जलवायु परिवर्तन का भी साक्षी रहा है। आज भारत विश्व की सबसे तीव्र गति से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में सम्मिलित है। इसके बावजूद बेरोजगारी, ग्रामीण पलायन, आर्थिक विषमता, पर्यावरणीय संकट, कृषि संकट, वैश्विक बाजार पर निर्भरता तथा स्थानीय उद्योगों का ह्रास जैसी अनेक समस्याएँ इसके समक्ष विद्यमान हैं। आज जब भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है, तब गांधीवादी आत्मनिर्भरता की संकल्पना को फिर से समझना और अपनाना आवश्यक हो गया है।

कोविड-19 महामारी के पश्चात भारत सरकार द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की घोषणा ने गांधीजी के स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के विचारों को पुनः राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है। इस महामारी के पश्चात वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उत्पन्न व्यवधान ने संपूर्ण विश्व को यह सिखाया कि अत्यधिक आयात-निर्भरता किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा और स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार ने मई 2020 में "आत्मनिर्भर भारत अभियान" की घोषणा की थी, जिसका उद्देश्य भारत को एक सशक्त, प्रतिस्पर्धी और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है। यद्यपि वर्तमान आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम आधुनिक उद्योग, डिजिटल तकनीक, नवाचार तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर आधारित है, वहीं गांधीजी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना नैतिक अर्थशास्त्र, ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग, स्थानीय उत्पादन तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। वर्तमान में इन दोनों दृष्टिकोणों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना आज के भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

गांधीजी की आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना तथा ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं आर्थिक आधार:

महात्मा गांधी के लिए आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक स्वावलंबन नहीं था। यह व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता का समन्वित स्वरूप था। गांधी जी ने इस सम्बन्ध में कहा था— भारत का भविष्य उसके गाँवों में बसता है।

गांधीजी का आत्मनिर्भर भारत स्वदेशी, ग्राम स्वराज, श्रम की प्रतिष्ठा, नैतिक अर्थव्यवस्था, समानता, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन जैसे स्तम्भों पर आधारित एक विस्तृत अवधारणा है। उन्होंने मशीनीकृत औद्योगीकरण के स्थान पर श्रम और हस्तशिल्प आधारित उत्पादन प्रणाली को अधिक उपयुक्त माना क्योंकि इससे रोजगार का सृजन होता है तथा आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण होता है। यह विचार आज भी रोजगार आधारित विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

गांधीजी का आत्मनिर्भरता का विचार उनके समग्र जीवन-दर्शन का हिस्सा था। इसे समझने के लिए उनके कुछ मूलभूत सिद्धांतों को समझना आवश्यक है:

1. स्वदेशी का सिद्धांत:

गांधीजी के सम्पूर्ण आर्थिक दर्शन का मूल आधार स्वदेशी था। स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं, बल्कि स्थानीय संसाधनों, स्थानीय कौशल तथा स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता देना था।

आर्थिक संदर्भ में इसका अर्थ था कि जिन वस्तुओं का उत्पादन स्थानीय स्तर पर हमारे पड़ोसियों द्वारा किया जा सकता है, उन्हें बाहर से नहीं खरीदा जाना चाहिए। गांधी जी के लिए स्वदेशी केवल विदेशी वस्तुओं का त्याग नहीं था, बल्कि यह एक नैतिक भावना थी जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने निकटतम परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करने को प्राथमिकता देता है।

उनका मानना था कि स्वदेशी की भावना हमें सेवा करने और दूर के व्यक्ति की उपेक्षा किए बिना अपने निकटतम परिवेश में ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन खोजने के लिए प्रेरित करती है। स्वदेशी का यह विचार आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ-साथ सामुदायिक सहयोग और स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर बल देता था। स्वदेशी की अवधारणा के अंतर्गत स्थानीय रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्थानीय उद्योगों का संरक्षण जैसे अनेक प्रमुख उद्देश्य निहित थे। वर्तमान 'वोकल फॉर लोकल' अभियान इसी संकल्पना का आधुनिक रूप माना जा सकता है।

2. ग्राम स्वराज:

गांधी जी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना का केंद्र बिंदु भारत के गांव थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है अतः जब तक गांव आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी नहीं बनेंगे, तब तक संपूर्ण राष्ट्र की आत्मनिर्भरता एक कल्पना मात्र रहेगी। ग्राम स्वराज की उनकी अवधारणा में प्रत्येक गांव को एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में देखा गया था, जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं— भोजन, वस्त्र और आश्रयकी पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो। यह विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था का प्रतिमान था, जिसमें उत्पादन के साधन बड़े-बड़े केंद्रीकृत कारखानों के बजाय लाखों छोटी इकाइयों में विकेंद्रित रहें, ताकि रोजगार का अधिकतम विस्तार हो सके। इससे समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति भी इसका लाभ पा सकेगा। गांधीजी ग्राम स्वराज को वास्तविक लोकतंत्र का आधार मानते थे। वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास माना जा सकता है।

3. सर्वोदय और अंत्योदय:

सर्वोदय गांधी जी की संपूर्ण सामाजिक-आर्थिक विचारधारा का सार है। इसका अर्थ है समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर सबसे वंचित एवं शोषित व्यक्ति (अंत्योदय) का कल्याण। गांधीजी की आत्मनिर्भरता का लक्ष्य केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं था, बल्कि 'सर्वोदय' (सभी का उदय) और 'अंत्योदय' (समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति का कल्याण) था। उनकी आत्मनिर्भरता का पैमाना यह था कि क्या कोई नीति समाज के सबसे गरीब और असहाय व्यक्ति को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने की शक्ति देती है या नहीं। गांधी जी की आत्मनिर्भरता केवल राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक शक्ति के संचय तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका अंतिम लक्ष्य था कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंचे। यही कारण है कि उनकी आत्मनिर्भरता की अवधारणा पूंजीवादी विकास के प्रतिमान से पूर्णतः भिन्न थी, जो प्रायः संसाधनों के केन्द्रीकरण पर आधारित है।

4. खादी और ग्रामोद्योग आंदोलन:

खादी गांधी जी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना का सबसे प्रतीकात्मक और व्यावहारिक स्वरूप था। चरखा गांधी जी के लिए केवल सूत कातने का उपकरण नहीं था बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक था। चरखे के माध्यम से सूत कातना और खादी वस्त्रधारण करना केवल एक आर्थिक क्रिया नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान, श्रम की गरिमा और स्वावलंबन का प्रतीक बन गया था। गांधी जी ने खादी को ग्रामीण बेरोजगारी दूर करने, विदेशी वस्त्र उद्योग पर निर्भरता समाप्त करने तथा जन सामान्य में स्वाभिमान जगाने के एक व्यावहारिक साधन के रूप में प्रस्तुत किया। इसके साथ-साथ उन्होंने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और स्थानीय पारंपरिक ज्ञान पर आधारित अन्य ग्रामोद्योगों को भी प्रोत्साहित किया, जैसे हाथ से बनाया गया कागज, स्थानीय तेल घानी उद्योग और चर्मशिल्प इत्यादि।

5. विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था:

गांधीजी केंद्रीकृत औद्योगीकरण के विरोधी थे। यह सिद्धांत आर्थिक असमानता को कम करने तथा संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया था, ताकि आत्मनिर्भरता का लाभ समाज के सबसे निचले वर्ग तक भी पहुंच सके। गांधी जी के अनुसार उत्पादन का विकेंद्रीकरण, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, सामुदायिक भागीदारी और स्थानीय बाजार आर्थिक असमानता को कम करते हैं। गांधीजी अर्थव्यवस्था को केवल लाभ अर्जित करने का माध्यम नहीं मानते थे, अपितु उनका लक्ष्य समावेशी सामुदायिक विकास की अवधारणा का पोषक था।

गांधीवादी आत्मनिर्भरता बनाम आधुनिक 'आत्मनिर्भर भारत अभियान':

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में प्रारम्भ किया गया 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' देश की आर्थिक क्षमता को सुदृढ़ बनाने, स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करने, रोजगार सृजन करने तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की भागीदारी को बढ़ाने की एक व्यापक पहल है। कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के बाधित होने से यह स्पष्ट हुआ कि किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यक वस्तुओं, स्वास्थ्य सेवाओं, कृषि, औद्योगिक उत्पादन तथा तकनीकी संसाधनों में आत्मनिर्भर होना अत्यंत आवश्यक है। प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तंभ—अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना, प्रौद्योगिकी-संचालित प्रणाली, जनसांख्यिकीय शक्ति तथा मांग भारत को एक सशक्त, सक्षम और प्रतिस्पर्धी राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखते हैं। यद्यपि यह कार्यक्रम आधुनिक आर्थिक विकास की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, तथापि इसकी मूल भावना गांधी जी के स्वदेशी, स्थानीय उत्पादन तथा रोजगारोन्मुख विकास के सिद्धांतों से मेल खाती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता को समझने के लिए, पारंपरिक गांधीवादी दृष्टिकोण और आधुनिक आर्थिक नीतियों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है, जिसे तालिका के रूप में निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है-

तुलनात्मक बिंदु	महात्मा गांधी का दृष्टिकोण	आधुनिक 'आत्म निर्भर भारत' विचारधारा
मूलदर्शन	नैतिक, मानवीय और प्रकृति-अनुकूल स्वावलंबन।	आर्थिक वृद्धि, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक सुरक्षा।
उत्पादन का पैमाना	जनसाधारण द्वारा उत्पादन	बड़े पैमाने पर उत्पादन और मेक इन इंडिया
तकनीकी भूमिका	श्रम-प्रधान तकनीक (Labor-intensive), मशीनीकरण का सीमित और नियंत्रित उपयोग।	पूँजी-प्रधान, एआई (AI), डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और ऑटोमेशन।
केंद्र बिंदु	ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कुटीर उद्योग।	विनिर्माण (Manufacturing) हब, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) और स्टार्टअप्स

गांधीजी की आत्मनिर्भरता की संकल्पना और वर्तमान आत्मनिर्भर भारत अभियान के बीच नाम की समानता के बावजूद वैचारिक और व्यावहारिक धरातल पर दोनों में कुछ भिन्नताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

सर्वप्रथम, केंद्रीयता के प्रश्न पर विचार करें तो गांधी जी की संकल्पना ग्राम आधारित तथा विकेंद्रीकृत थी, जबकि वर्तमान आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत बड़े पैमाने पर औद्योगिक विनिर्माण, बड़ी कंपनियों तथा शहरी-औद्योगिक केंद्रों पर अधिक ध्यान दिया गया है। स्पष्टतः इस योजना का लाभ मुख्यतः बड़े और मध्यम स्तर के उद्योगों को अधिक सुगमता से प्राप्त होता है, जबकि गांधीवादी मॉडल में लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा हस्तशिल्प को अधिक वरीयता दी गई थी।

दूसरा, प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण में भी अंतर स्पष्ट है। गांधीजी बड़ी मशीनों तथा भारी उद्योगों के प्रति सशंकित थे, विशेष कर तब, जब वे मानवश्रम का स्थान ले लें और बेरोजगारी उत्पन्न करें। उनके अनुसार हस्तशिल्प का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए जिससे स्वरोजगार को बढ़ावा मिले। इसके विपरीत, वर्तमान अभियान डिजिटल प्रौद्योगिकी, स्वचालन (ऑटोमेशन), कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा उच्चतकनीकी विनिर्माण को आत्मनिर्भरता के महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखता है।

तीसरा, दोनों के लक्ष्य में भी अंतर है। गांधीजी के लिए आत्मनिर्भरता का अंतिम उद्देश्य नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान, सामाजिक समानता और श्रम की गरिमा की स्थापना थी। वर्तमान अभियान का लक्ष्य मुख्यतः आर्थिक प्रतिस्पर्धा में बने रहना, निर्यात को बढ़ाना और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की स्थिति सुदृढ़ करना है, जो निश्चित रूप से विशुद्ध व्यापारिक दृष्टिकोण है।

इन भिन्नताओं के पश्चात् भी दोनों दृष्टिकोणों में कुछ महत्वपूर्ण समानताएं भी विद्यमान हैं। दोनों ही आयात-निर्भरता को कम करने, घरेलू उत्पादन क्षमता बढ़ाने और स्थानीय उत्पादों के प्रति गर्व की भावना जागृत करने पर बल देते हैं। "वोकल फॉर लोकल" का नारा गांधीजी के स्वदेशी सिद्धांत की ही प्रतिध्वनि प्रतीत होता है। इसी प्रकार खादी और ग्रामोद्योग को वर्तमान सरकार द्वारा पुनः बढ़ाने के प्रयास तथा "एकजिला, एकउत्पाद" जैसी स्थानीय प्रोत्साहन की योजनाएं गांधीवादी भावना को ही प्रतिबिंबित करती हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आधुनिक आत्मनिर्भरता की संकल्पना जहां भारत को एक वैश्विक विनिर्माण शक्ति बनाने और आयात पर निर्भरता कम करने पर केंद्रित है, वहीं गांधीवादी आत्मनिर्भरता का आधार स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भर हो कर राष्ट्र का विकास करना था। आधुनिक नीति को अधिक समावेशी बनाने के लिए इसमें गांधीवादी तत्वों का सम्मिश्रण अनिवार्य प्रतीत होता है। वर्तमान नीति भले ही गांधी जी के सिद्धांतों का पूर्ण प्रतिरूप नहीं है, किन्तु उसकी आधारभूत प्रेरणा स्थानीय संसाधनों की क्षमता, स्वदेशी उत्पादन और रोजगार विस्तार से जुड़ी हुई है।

आधुनिक युग में गांधीवादी आत्मनिर्भरता के मार्ग में चुनौतियाँ:

गांधीवादी आत्मनिर्भरता की संकल्पना को वर्तमान संदर्भ में साकार करने के मार्ग में अनेक गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यद्यपि गांधीवादी दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक और मानवीय प्रतीत होता है, किंतु वर्तमान वैश्विक और तकनीकी व्यवस्था में इसे पूर्णतः लागू करने में कई चुनौतियाँ हैं:

1. औद्योगीकरण और गांधीवादी विकेंद्रीकरण के बीच द्वंद्व:

वर्तमान आर्थिक नीतियां बड़े पैमाने के औद्योगीकरण, बड़ी पूंजी और बड़ी कंपनियों को प्राथमिकता देती प्रतीत होती हैं, जो गांधीवादी विकेंद्रीकरण के मूल सिद्धांत के विपरीत है। बड़े कॉर्पोरेट घरानों के वर्चस्व से लघु एवं कुटीर उद्योगों को गंभीर प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिससे आर्थिक विकेंद्रीकरण का लक्ष्य कठिन हो जाता है।

2. ग्रामीण-शहरी असमानता:

आर्थिक सुधारों तथा औद्योगिक विकास का लाभ प्रायः शहरी क्षेत्रों तथा विकसित राज्यों में अधिक केंद्रित रहता है, जबकि ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्र इससे वंचित रह जाते हैं। इस असमानता को दूर किए बिना गांधी वादी संकल्पना में निहित सच्ची आत्मनिर्भरता की प्राप्ति असंभव है।

3. अवसंरचना एवं कौशल विकास की कमी:

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त अवसंरचना, विद्युत आपूर्ति, परिवहन सुविधा तथा तकनीकी शिक्षा का अभाव आत्मनिर्भर ग्रामोद्योगों के विकास में एक बड़ी बाधा है। इसी प्रकार कुशल श्रमशक्ति के अभाव में पारंपरिक उद्योगों का आधुनिकीकरण भी कठिन होता है।

4. पूंजी और ऋण की उपलब्धता:

लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा ग्रामीण उद्यमियों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से पर्याप्त तथा समय पर ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इससे अनेक संभावनाशील उद्यम प्रारंभिक अवस्था में ही असफल हो जाते हैं। यद्यपि इस सम्बन्ध में मुद्रा योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से सकारात्मक प्रयास किये गए हैं, तथापि सभी जरूरतमंदों तक इसका लाभ आज भी नहीं पहुँच सका है।

5. पर्यावरणीय दबाव और संसाधनों का दोहन:

तीव्र औद्योगीकरण तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रसार से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव निरंतर बढ़ रहा है, जो गांधीवादी सादगी एवं संयम के सिद्धांत के विपरीत है। संसाधनों के अनुचित दोहन तथा धारणीय विकास के अनुकूल संस्कृति का विकास न होने से पर्यावरणीय स्थिरता अब खतरे में पड़ चुकी है। इस परिवेश में सतत विकास तथा तीव्र आर्थिक वृद्धि की परस्पर विरोधाभासी मांगों के बीच संतुलन स्थापित करना एक बड़ी चुनौती है।

6. नीति कार्यान्वयन की चुनौतियाँ:

अनेक बार उत्कृष्ट नीतियों के बावजूद उनके प्रभावी क्रियान्वयन में प्रशासनिक जटिलताएं, भ्रष्टाचार, नौकरशाही विलंब तथा राज्य-केंद्र समन्वय की कमी बाधा उत्पन्न करती है, जिससे योजनाओं का वास्तविक लाभ अंतिम लाभार्थी तक नहीं पहुँच पाता है। सरकारी तंत्र के समावेशन में अक्षमता और समय समय पर उनका पुनरीक्षण न होना समस्या को और जटिल बना देते हैं।

7. वैश्विक मूल्य श्रृंखला की अनिवार्यता

आज का विश्व एक वैश्विक गांव (Global Village) बन चुका है। कोई भी देश पूरी तरह से अलगाव में रहकर आर्थिक प्रगति नहीं कर सकता। आधुनिक स्मार्टफोन, कंप्यूटर, चिकित्सा उपकरण और उन्नत रक्षा प्रणालियों के निर्माण के लिए दुर्लभ खनिजों (जैसे लिथियम, कोबाल्ट) और वैश्विक पेटेंट की आवश्यकता होती है। गांधीवादी अति-स्थानीयकरण (Extreme Localization) की नीति अपना ने पर भारत वैश्विक तकनीकी रेस में पिछड़ सकता है। ऐसी स्थिति में पूर्ण आत्मनिर्भरता व्यावहारिक नहीं कही जा सकती।

8. मशीनीकरण, एआई(AI) और रोजगार का संकट

गांधीजी उन मशीनों के विरोधी थे जो इंसानों का रोजगार छीनती थीं। लेकिन आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(AI) और ऑटोमेशन (Automation) चौथी औद्योगिक क्रांति के स्तंभ बन चुके हैं। इससे बड़े पैमाने पर उत्पादन की लागत कम होती है, जिससे स्थानीय कुटीर उद्योग प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाते। आधुनिक उद्योगों में श्रम की आवश्यकता कम और पूंजी की अधिक होती है, जो गांधीजी के श्रम-प्रधान मॉडल के विपरीत है।

9. उपभोक्तावादी संस्कृति:

आधुनिक समाज की नींव 'अधिकतम उपभोग' की अवधारणा पर टिकी है। टीवी और इंटरनेट आधारित विज्ञापन और सोशल मीडिया ने मानवीय आकांक्षाओं को असीमित रूप से बढ़ा दिया है। वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभाव से भारतीय उपभोक्ताओं की प्राथमिकताएं प्रायः विदेशी ब्रांड तथा आयातित वस्तुओं की ओर झुकी रहती हैं। जब तक व्यापक स्तर पर उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन नहीं आता, तब तक "वोकल फॉर

लोकल" जैसे अभियान सीमित प्रभाव ही उत्पन्न कर पाएंगे। गांधीजी का दर्शन 'सीमित आवश्यकताओं' और 'अपरिग्रह' (गैर-संचय) पर आधारित था। वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में लोगों को सादगी और न्यूनतम उपभोग की ओर मोड़ना एक बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक चुनौती है। गांधीजी आवश्यकता आधारित उपभोग के पक्षधर थे। आज का समाज ब्रांड संस्कृति, विलासिता की ओर अग्रसर है। यह प्रवृत्ति गांधीवादी सादगी से विपरीत है।

10. ग्रामीण बुनियादी ढांचे की कमी और कौशल अंतराल

ग्राम स्वराज की सफलता के लिए गांवों का सशक्त होना आवश्यक है। आज भी भारतीय गांवों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, निर्बाध बिजली और उच्च गति के इंटरनेट की कमी है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण युवाओं में आधुनिक बाजार के अनुकूल कौशल का या तो अभाव है, या वे सीखना नहीं चाहते जिसके कारण वे केवल कम वेतन वाले अकुशल कार्यों तक सीमित रह जाते हैं। इससे शिक्षा और रोजगार के बीच एक गहरी खाई उत्पन्न हो चुकी है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधीवादी आत्म निर्भरता की संभावनाएँ

गांधीवादी आत्मनिर्भरता को आज के संदर्भ में प्रासंगिक बनाने के लिए एक 'मध्यममार्ग' (Middle Path) की आवश्यकता है। इसे हम 'प्रगतिशील स्वदेशी' या 'ग्लोकल' (Glocal-Global + Local) दृष्टिकोण कह सकते हैं। वर्तमान तकनीकी और सामाजिक परिवेश में गांधीवादी आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों को लागू करने की अपार संभावनाएँ हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है:

1. ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पुनरुत्थान:

भारत की लगभग आधी से अधिक जनसंख्या आज भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। यदि कृषि के साथ कृषि-आधारित उद्योग, दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, जैविक खेती तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को स्थानीय स्तर पर विकसित किया जाए, तो गांधीजी के ग्राम स्वराज की अवधारणा को व्यवहार में लाया जा सकता है। गांधीवादी ग्राम स्वराज की अवधारणा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। डिजिटल इंडिया, ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार), किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) तथा ग्रामीण डिजिटल अवसंरचना के विस्तार जैसी पहलें गांव को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

2. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को सशक्त बनाना:

एम एस एम ई क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तथा रोजगार सृजन में इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र को गांधी जी के कुटीर उद्योगों का आधुनिक रूप माना जा सकता है। वर्तमान में यह क्षेत्र भारत में कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगार पैदा करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों और ई-कॉमर्स के माध्यम से ग्रामीण कारीगरों, बुनकरों और लघु उद्यमियों को सीधे वैश्विक बाजार से जोड़ा जा रहा है। यह गांधीजी के 'जन साधारण द्वारा उत्पादन' के सिद्धांत को आधुनिक तकनीक के साथ साकार करने का सुनहरा अवसर है। गांधीवादी विचार धारा से प्रेरित होकर सरकार यदि इस क्षेत्र को ऋण सुगमता, कौशल विकास तथा बाजार पहुंच के माध्यम से सशक्त बनाए, तो विकेंद्रीकृत आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

3. पारंपरिक हस्तशिल्प और खादी उद्योग का पुनरुद्धार- डिजिटल खादी:

गांधीजी ने खादी को स्वतंत्रता आंदोलन और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक बनाया था। आज 'वोकल फॉर लोकल' का नारा उसी स्वदेशी भावना का आधुनिक विस्तार है। युवाओं में खादी और स्थानीय ब्रांड्स के प्रति आकर्षण बढ़ा है। कॉर्पोरेट सेक्टर और फैशन इंडस्ट्री में 'सस्टेनेबल फैशन' के रूप में खादी की स्वीकार्यता

गांधीवादी आत्मनिर्भरता की सफलता का एक बड़ा उदाहरण है। वैश्विकस्तर पर हस्तनिर्मित, पर्यावरण-अनुकूल तथा सतत उत्पादों की मांग निरंतर बढ़ रही है। भारतीय खादी, हथकरघा तथा हस्त शिल्प उद्योग इस अवसर का लाभ उठा कर न केवल घरेलू बाजार में बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी अपनी उपस्थिति सुदृढ़ कर सकते हैं, जिससे लाखों ग्रामीण कारीगरों को रोजगार प्राप्त हो सकता है।

4. स्वदेशी एवं स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन- (वोकल फॉर लोकल):

हस्तशिल्प, हथकरघा, खाद्य प्रसंस्करण, जैविक कृषि, मधुमक्खी पालन, डेयरी उद्योग तथा अन्य ग्रामीण उद्यमों के लिए आसान ऋण, तकनीकी सहायता, विपणन सुविधा, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ब्रांडिंग उपलब्ध कराई जाए। केवल स्वदेशी उत्पादों का उत्पादन ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी गुणवत्ता, नवाचार तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में भी निरंतर सुधार आवश्यक है। अब समय आ चुका है कि "लोकल फॉर ग्लोबल" की अवधारणा को आगे बढ़ाया जाए।

5. डिजिटल बुनियादी ढांचे का ग्रामीण विस्तार:

भारतीय सॉफ्टवेयर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर निर्माण, डेटा सेंटर तथा डिजिटल स्टार्ट अपको बढ़ावा देकर तकनीकी आत्मनिर्भरता सुनिश्चित की जाए। गांवों को केवल कृषि तक सीमित न रख कर उन्हें डिजिटल हाईवे से जोड़ा जाए। भारत नेट जैसी योजनाओं के माध्यम से प्रत्येक गांव को हाई-स्पीड इंटरनेट प्रदान करना पहला कदम होना चाहिए। वर्तमान यूपीआई और डिजिटल इंडिया जैसी पहलें आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती हैं।

6. महिला सशक्तिकरण तथा महिला उद्यमिता:

गांधीजी महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की समान भागीदार मानते थे। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं कुटीर उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण तथा हस्तशिल्प क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। गांधीवादी आत्मनिर्भरता का यह आयाम महिला सशक्तिकरण तथा आर्थिक समावेशन को एक साथ आगे बढ़ाने की महत्वपूर्ण संभावना प्रस्तुत करता है। यदि इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता बढ़ाई जाए तो आत्मनिर्भर भारत की गति और तेज हो सकती है।

7. युवाओं के लिए अवसर- कौशल आधारित शिक्षा

भारत विश्व की सब से युवा आबादी वाले देशों में से एक है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा को स्थानीय रोजगार, उद्यमिता, कृषि, डिजिटल तकनीक एवं नवाचार से जोड़ा जाए। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए। ग्रामीण युवाओं को पारंपरिक कलाओं के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी कौशल (जैसे डेटा एंट्री, डिजिटल मार्केटिंग, एग्रो-टेक संचालन) का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे स्थानीय स्तर पर ही रोजगार सृजित कर सकें।

8. कृषि-प्रसंस्करण और जैविक खेती

गांधीजी प्राकृतिक जीवन और टिकाऊ कृषि के पक्षधर थे। वर्तमान में पर्यावरण संकट और स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण जैविक और प्राकृतिक खेती की मांग तेजी से बढ़ी है। ग्रामीण क्षेत्रों में ही खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना करके कृषि से होने वाली आय को दोगुना किया जा सकता है। इससे गांवों से शहरों की ओर होने वाला पलायन रुकेगा और ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

निष्कर्ष:

महात्मा गांधी की आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता का विचार नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, नैतिक मूल्यों, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, श्रम की प्रतिष्ठा, पर्यावरण संरक्षण एवं मानवीय गरिमा पर आधारित एक समग्र विकास दर्शन है। उन्होंने जिस भारत की कल्पना की थी, उसमें प्रत्येक व्यक्ति को

सम्मानजनक आजीविका, समान अवसर तथा निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता प्राप्त होने के पूर्ण अवसर विद्यमान थे। यदि ग्राम स्वराज, स्थानीय उत्पादन, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास, डिजिटल नवाचार और हरित अर्थव्यवस्था जैसी पहलों को समन्वित रूप से आगे बढ़ाया जाए, तो भारत आर्थिक रूप से सशक्त होने के साथ-साथ सामाजिक रूप से समावेशी, न्यायपूर्ण तथा पर्यावरणीय दृष्टि से संधारणीय विकास वाला राष्ट्र बन सकता है। यही महात्मा गांधी के आत्मनिर्भर भारत की वास्तविक भावना है और यही विकसित भारत के निर्माण का स्थायी मार्ग भी है।

संदर्भग्रंथसूची:-

- गांधी, एम. के. (1909). *हिंदस्वराज*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
- गांधी, एम. के. (1962). *ग्रामस्वराज*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
- गांधी, एम. के. (1936). हरिजन, 4-4-1936; 62:298
- शर्मा, बी.एम. शर्मा, रामकृष्ण दत्त. शर्मा, सविता (2015) गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- कुमारप्पा, जे. सी. (1945). *इकोनॉमी ऑफ परमानेंस*. सर्वसेवासंघप्रकाशन, वाराणसी
- कुमार, राजीव. (2004) गांधीवादी अर्थशास्त्र और ग्रामीण विकास. रावत पब्लिकेशन, जयपुर
- मिश्र, एस. एन. (2012). आधुनिक भारत में गांधीवादी चिंतन की प्रासंगिकता. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली
- शर्मा, राज कुमार (2019). गाँधी और आधुनिक विकास. निहार प्रकाशन, हैदराबाद
- दास, बी.के. (2015). गाँधीवादी राजनीति और दर्शन. राजीव प्रकाशन, नई दिल्ली
- पटेल, शक्तिशील. (2014). ग्राम स्वराज: एक पुनर्विचार. विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, प्रभाकर. (2017). गाँधीजी का आर्थिक विचार और भारत. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
- डॉ कृष्णा सिंह) .(2025). गांधी का आत्मनिर्भरता .भारत आत्मनिर्भर और सिद्धांत (स्वदेशी) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 15(4), 514-525
- कुमार, आर.एवं शर्मा, एस. (2022), समकालीन भारत में गांधीवादी अर्थशास्त्र और आत्मनिर्भरता. इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल इकॉनमी, 37(2), 45-58
- सिंह, सुरेन्द्र. (2015). गाँधी का स्वदेशी मॉडल व आर्थिक विकास. जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 3(2), 46-47
- NITI Aayog. (2018). Strategy for New India @75. Government of India.https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2019-01/Strategy_for_New_India_0.pdf
- <https://www.mkgandhi.org/articles/gandhi's-economic-ideas.html>
- <https://www.mkgandhi.org/articles/understanding-gandhis-vision-of-swadeshi.html>
- <https://www.mkgandhi.org/ebks/Gandhionvillages.pdf>
- <https://static.pib.gov.in/WriteReadData/userfiles/Aatmanirbhar%20Presentation%20Part-1%20Business%20including%20MSMEs%2013-5-2020.pdf>

